

# ॥ कृष्ण चालीसा ॥

॥ दोहा ॥

बंशी शोभित कर मधुर, नील जलद तन श्याम ।  
अरुण अधर जनु बिम्बफल, नयन कमल अभिराम ॥  
पूर्ण इन्द्र, अरविन्द मुख, पीताम्बर शुभ साज ।  
जय मनमोहन मदन छवि, कृष्णचन्द्र महाराज ॥

॥ चौपाई ॥

जय यदुनन्दन जय जगवन्दन ।  
जय वसुदेव देवकी नन्दन ॥  
जय यशुदा सुत नन्द दुलारे ।  
जय प्रभु भक्तन के दृग तारे ॥

जय नट-नागर नाग नथैया ।  
कृष्ण कन्हैया धेनु चरैया ॥

पुनि नख पर प्रभु गिरिवर धारो ।  
आओ दीनन कष्ट निवारो ॥

वंशी मधुर अधर धरी तेरी ।  
होवे पूर्ण मनोरथ मेरो ॥

आओ हरि पुनि माखन चाखो ।  
आज लाज भारत की राखो ॥

गोल कपोल, चिबुक अरुणारे ।  
मृदु मुस्कान मोहिनी डारे ॥

रंजित राजिव नयन विशाला ।  
मोर मुकुट वैजयंती माला ॥

कुण्डल श्रवण पीतपट आछे ।  
कटि किंकणी काछन काछे ॥

नील जलज सुन्दर तनु सोहे ।  
छवि लखि, सुर नर मुनिमन मोहे ॥

मस्तक तिलक, अलक घुंघराले ।  
आओ कृष्ण बांसुरी वाले ॥

करि पय पान, पुतनहि तारयो ।  
अका बका कागासुर मारयो ॥

मधुवन जलत अग्नि जब ज्वाला ।  
भै शीतल, लखितहिं नन्दलाला ॥

सुरपति जब ब्रज चढ़यो रिसाई ।  
मसूर धार वारि वर्षाई ॥

लगत-लगत ब्रज चहन बहायो ।  
गोवर्धन नखधारि बचायो ॥

लखि यसुदा मन भ्रम अधिकाई ।  
मुख महं चौदह भुवन दिखाई ॥

दुष्ट कंस अति उधम मचायो ।  
कोटि कमल जब फूल मंगायो ॥

नाथि कालियहिं तब तुम लीन्हें ।  
चरणचिन्ह दै निर्भय किन्हें ॥

करि गोपिन संग रास विलासा ।  
सबकी पूरण करी अभिलाषा ॥

केतिक महा असुर संहारयो ।  
कंसहि केस पकड़ि दै मारयो ॥

मात-पिता की बन्दि छुड़ाई ।  
उग्रसेन कहं राज दिलाई ॥

महि से मृतक छहों सुत लायो ।  
मातु देवकी शोक मिटायो ॥

भौमासुर मुर दैत्य संहारी ।  
लाये षट दश सहसकुमारी ॥

दै भिन्हीं तृण चीर सहारा ।  
जरासिंधु राक्षस कहं मारा ॥

असुर बकासुर आदिक मारयो ।  
भक्तन के तब कष्ट निवारियो ॥

दीन सुदामा के दुःख टारयो ।  
तंदुल तीन मूँठ मुख डारयो ॥

प्रेम के साग विदुर घर मांगे ।  
दुर्योधन के मेवा त्यागे ॥

लखि प्रेम की महिमा भारी ।  
ऐसे श्याम दीन हितकारी ॥

भारत के पारथ रथ हांके ।  
लिए चक्र कर नहिं बल ताके ॥

निज गीता के ज्ञान सुनाये ।  
भक्तन हृदय सुधा वर्षाये ॥

मीरा थी ऐसी मतवाली ।  
विष पी गई बजाकर ताली ॥

राना भेजा सांप पिटारी ।  
शालिग्राम बने बनवारी ॥

निज माया तुम विधिहिं दिखायो ।  
उर ते संशय सकल मिटायो ॥

तब शत निन्दा करी तत्काला ।  
जीवन मुक्त भयो शिशुपाला ॥

जबहिं द्रौपदी टेर लगाई ।  
दीनानाथ लाज अब जाई ॥

तुरतहिं वसन बने ननन्दलाला ।  
बढ़े चीर भै अरि मुँह काला ॥

अस नाथ के नाथ कन्हैया ।  
डूबत भंवर बचावत नैया ॥

सुन्दरदास आस उर धारी ।  
दयादृष्टि कीजै बनवारी ॥

नाथ सकल मम कुमति निवारो ।  
क्षमहु बेगि अपराध हमारो ॥

खोलो पट अब दर्शन दीजै ।  
बोलो कृष्ण कन्हैया की जै ॥

॥ दोहा ॥

यह चालीसा कृष्ण का, पाठ करै उर धारि।

अष्ट सिद्धि नवनिधि फल, लहै पदारथ चारि॥

SanatanGyaan.com

www.sanatanGyaan.com